INTERNATIONAL CONFERENCE ON RESEARCHES IN ENGINEERING, SCIENCE, MANAGEMENT AND HUMANITIES (ICRESMH – 2025)

Delhi, India on 27th April, 2025

CERTIFICATE NO : ICRESMH /2025/C0425419

प्रेमचंद और समकालीन हिन्दी उपन्यास की संवेदना का अध्ययन

Soumya S

Research Scholar, Ph.D. in Hindi, P.K. University, Shivpuri, M.P., India.

साराश

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के ऐसे युगप्रवर्तक उपन्यासकार हैं जिन्होंने उपन्यास को सामाजिक यथार्थ से गहराई से जोड़ा। उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन, स्त्री की स्थिति, वर्ग-विरोध, नैतिक द्वंद्व और सामाजिक अन्याय की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। 'गोदान', 'गबन' और 'सेवासदन' जैसे उपन्यासों में उन्होंने आम जनजीवन की पीड़ा, शोषण और संघर्ष को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया। समकालीन हिन्दी उपन्यास की संवेदना भी सामाजिक बदलाव, हाशिये के समुदायों की आवाज़, स्त्री-अस्मिता, दलित-विमर्श और वैश्वीकरण से उत्पन्न संकटों पर केंद्रित है। जहाँ प्रेमचंद ने औपनिवेशिक काल के भारतीय समाज की विषमताओं को उजागर किया, वहीं आज के उपन्यासकार बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिवेश, शहरी जीवन की जटिलताओं और व्यक्तिवादी मानसिकता को अभिव्यक्त कर रहे हैं। प्रेमचंद की संवेदना मानवीय करुणा, नैतिक चेतना और सामाजिक प्रतिबद्धता पर आधारित थी, जो समकालीन उपन्यासों में नए संदर्भों और रूपों में विकसित हुई है। प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा आज भी हिन्दी उपन्यास की मूल संवेदनात्मक धारा को दिशा प्रदान करती है।